

प्राक्कथन

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली और समूची भारतीय कृषि के लिए यह वर्ष विशेष उपलब्धियों भरा रहा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 83वें स्थापना दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री का अभिभाषण और प्रशंसा ने भा.कृ.अनु.प. परिवार में गर्व की भावना जगा दी है। इसके साथ ही 24 करोड़ 20 लाख टन का सर्वाधिक उत्पादन देश के कृषक जगत के लिए खुशी और संतोष का सूचक भी है।

यह शानदार उपलब्धि भा.कृ.अनु.प. द्वारा विकास के लिए किए जा रहे प्रयत्नों और समय अनुकूल कृषि परामर्श के साथ ही उचित प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेप की परिचायक है। अनुसंधान के क्षेत्र में भा.कृ.अनु.प. के नेतृत्व में भारतीय वैज्ञानिकों के एक दल ने विश्व में पहली बार लोकप्रिय अरहर किस्म *आशा* के जीनोम को डिकोड करने में सफलता हासिल की है। इस तरह प्राप्त जीनोम पूल से सहनशील और प्रतिरोधी किस्मों के विकास में मदद मिलेगी। इसके अलावा विश्व प्रसिद्ध मादा *मुरा* भैंस का संपूर्ण जीनोम मानचित्रण किया गया। किसान के खेतों में समृद्धि लाने के लिए भा.कृ.अनु.प. द्वारा विभिन्न कृषि-जलवायुवीय क्षेत्रों के लिए खाद्यान्न की 48 उन्नत किस्में और बागवानी फसलों की 51 उन्नत किस्में जारी की गयीं। उच्च मूल्य वाली, बाजार की पसंदीदा समुद्री शीतोष्ण फिनफिश (सिल्वर पोम्पेनो) का देश में पहली बार सफलतापूर्वक प्रजनन और लार्वा पालन किया गया क्योंकि यह प्रजाति समुद्री मछली प्राप्ति क्षेत्र में बहुत कम ही उपलब्ध होती है। इसी तरह शीत ऋतु में बनाना श्रिम्प (*पीनस मेरगुनेन्सिस*) का खारे जल में सफलतापूर्वक संवर्द्धन भी जलजीव संवर्द्धन के क्षेत्र उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण उपलब्धियों में एक रहा।

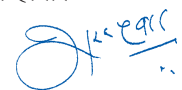
फसल अपशिष्टों से मूल्य वर्धित उत्पाद तैयार करने के अभिनव प्रयोग की दिशा में पैक फूड की सुरक्षा और भंडारण अवधि बढ़ाने के लिए कपास अपशिष्ट से नैनोसैल्यूलोज सहित स्टार्च आधारित फिल्म का विकास एक अच्छा उदाहरण है। अलसी और इसकी खली से आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण ओमेगा 3 वसीय अम्ल का निष्कर्षण करने की प्रौद्योगिकी का विकास करके 'अलसी जैव-ग्राम' संकल्पना द्वारा इसका व्यावसायीकरण किया गया। बिजली उत्पादन के लिए कृषि अपशिष्ट का उपयोग करने वाले विकेन्द्रीकृत पावर प्लंट का डिजाइन तैयार करके इसका विकास किया गया ताकि खेतों में अबाधित बिजली की आपूर्ति की जा सके।

हर्ष का विषय है कि 18 नये केवीके इस वर्ष शुरु करने से कुल केवीके संख्या 607 हो गयी है यानी कि खेतों तक प्रौद्योगिकी पहुंचाने के दृढ़निश्चय को यह साबित करता है। देशभर में लगभग 95,000 अग्रिम प्रदर्शनों के जरिए प्रमुख फसलों में कृषि विज्ञान केन्द्रों ने प्रौद्योगिकी सहायता मुहैया की है। इसके अलावा 11 राज्यों के 137 जिलों में दलहन की उत्पादकता के 6,000 से ज्यादा प्रौद्योगिकी प्रदर्शन किये गये हैं।

डेअर/भा.कृ.अनु.प. के कॉरपोरेट प्लेटफार्म के रूप में एग्री इन्वोवेट इंडिया लि. की स्थापना ने बिजनैस मॉडलों के जरिये कृषि प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण के नये मार्ग प्रशस्त किए हैं। बिजनेस प्लानिंग और डेवलपमेंट यूनितों के देशभर में फैले नेटवर्क के कारण इस वर्ष 30 प्रौद्योगिकियों का व्यावसायीकरण संभव हो सका। बौद्धिक संपदा अधिकार में नये उत्साह के कारण अंतर्राष्ट्रीय और 3 राष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त हो सके और 37 पेटेंट आवेदन किये गये।

बारलॉग इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशिया इन इंडिया और आईसीएआर-नॉरमन बारलॉग चेयर स्थापित करने में भा.कृ.अनु.प. का सिमिट, मैक्सिको के साथ सहयोग वैश्विक संपर्क को मजबूत करने की दिशा में परिषद की वैश्विक स्तर पर विशेष उपलब्धि है। प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण और व्यावसायीकरण हेतु 95 निजी क्षेत्र के संगठनों के साथ भा.कृ.अनु.प. ने 181 भागीदारियां विकसित की हैं।

मुझे बेहद खुशी है कि हाल ही में संपन्न अंशधारकों के साथ परामर्श श्रृंखला से 12वीं योजना के महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान हो सकी है जैसे कृषि में उत्पादकता और लाभ बढ़ाना, जलवायु अनुकूल कृषि, गौण कृषि और गुणतापूर्ण मानव संसाधनों का विकास ताकि भविष्य की चुनौतियों का सामना किया जा सके। कृषि अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए मैं भा.कृ.अनु.प. के प्रयत्नों की प्रशंसा करता हूं और उम्मीद करता हूं कि डेअर/भा.कृ.अनु.प. वार्षिक रिपोर्ट में प्रस्तुत जानकारीयां भारतीय कृषि में रूचि रखने वालों के लिए ज्ञान संसाधन साबित होगी।



(शरद पवार)

अध्यक्ष

भा.कृ.अनु.प. सोसायटी